Behiouristic Approach of Abnormality

असामान्य व्यवहार के स्वरूप की व्याख्या एवं उपचार करने के लिए व्यवहारवादी विचारधारा की उत्पत्ति मनोविज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण स्कूल जिसे 'व्यवहारवाद' कहा जाता है, से हुआ है। व्यवहारवाद के तीन महत्त्वपूर्ण पूर्वकल्पना (assumption) हैं जो असामान्य मनोविज्ञान पर सीधे लागू होता है। वे तीन पूर्वकल्पनाओं पर यहाँ विचार करना होगा :-

(1) पर्यावरणवाद (Environmentalism) :- यहाँ इस बात पर बल डाला गया है कि सभी प्राणी (अर्थात् मनुष्य तथा पशु दोनों ही) पर्यावरण द्वारा निर्धारित होता है। हमलोग अपने गत साहचर्यों के आधार पर भविष्य के बारे में सीखते हैं। यही कारण है कि हमलोग का व्यवहार दंड तथा पुरस्कार द्वारा व्यवस्थित (shape) किया जाता है। पुरस्कृत व्यवहार को हम भविष्य में करना चाहते हैं तथा दंडित व्यवहार को नहीं करना चाहते हैं।

(2) प्रयोगवाद (Experimentalism) :- यह पूर्वकल्पना का सम्बन्ध इस बात से है कि प्रयोग के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि पर्यावरण के किस पहलू से व्यवहार प्रभावित होता है तथा किस तरह से हम उसे परिवर्तित कर सकते हैं। अगर पर्यावरण के महत्त्वपूर्ण तथ्य को रोक लिया जाता है, व्यवहार का वर्तमान विशेषता समाप्त हो जाएगी और अगर महत्त्वपूर्ण तथ्य को पुनर्स्थापित कर दिया जाता है, तो व्यवहार का वर्तमान विशेषता पुनर्वापस आ जाता है।

(3) आशावाद (Optimism) :- इस पूर्वकल्पना का सम्बन्ध परिवर्तन (change) से है। अगर व्यक्ति पर्यावरण का प्रतिफल (product) है और अगर वातावरण का वह सब पहलू जो उसे परिवर्तित किया है, को प्रयोग द्वारा ज्ञात किया जा सकता है, तो पर्यावरण में कभी परिवर्तन होने से व्यक्ति में भी परिवर्तन होगा।

उक्त तथ्यों का सार यह है कि व्यवहारवादी विचारधारा के अनुसार कुसमायोजी व्यवहार या असामान्य व्यवहार के दो मुख्य कारण होते हैं :-

(i) व्यक्ति द्वारा समाजयोजी व्यवहार या निपुणता या संतोषजनक वैयक्तिक सम्बन्धों को विकसित करने की असफलता

(ii) अप्रभावी या कुसमायोजी व्यवहार को सीखना।

व्यवहारवादी विचारधारा के अनुसार सीखने के दो मुख्य प्रक्रियाएँ (proceses) हैं और इन प्रक्रियाओं के ही माध्यम से व्यक्ति सामान्य एवं असामान्य व्यवहार को सीखता है। ये दो प्रविधियाँ हैं - पैवलोवियन एवं क्लासिकी अनुबंधन (Pavlovian or classical conditioning) तथा साधनात्मक या क्रियाप्रसूत

अनुबंधन (instrumental or operant learning)। इन दोनों का वर्णन तथा असामान्य व्यवहार में उसकी उपयोगिता निम्नांकित है :-

(1) पैवलोवियन या क्लासिकी अनुबंधन (Pavlovian or Classical Conditioning) :- सीखने के इस सिद्धान्त की औपचारिक व्याख्या रूसी वैज्ञानिक आई०पी० पैवलव (I.P. Pavlov) द्वारा की गयी इस तरह के सिद्धान्त में उद्दीपक (stimulus) तथा अनुक्रिया (response) के बीच सामयिक साहचर्य (temporal association) पर बल डाला जाता है जैसे, भोजन प्राणी में लार-स्त्राव (salivation) की अनुक्रिया स्वाभाविक रूप से करता है और कोई भी उद्दीपक (stimulus) जो इस भोजन से ठीक कुछ समय पहले दिया जाएगा, कुछ प्रयासों के बाद वह भी भोजन के समानों लार-स्त्राव की अनुक्रिया करने लगेगा। इस उदाहरण में भोजन एक अस्वाभाविक उद्दीपक (unconditioned stimulus) तथा लार-स्त्राव की अनुक्रिया एक अस्वाभाविक अनुक्रिया (unconditioned response or UR) का उदाहरण है। भोजन के ठीक पहले दिया जाने वाला उद्दीपक अनुबंधित उद्दीपक (conditioned stimulus) का उदाहरण है।

असामान्य मनोविज्ञान के लिए क्लासिकी अनुबंधन का महत्त्व इसलिए विशेष होता है कि स्वायत्त तंत्रिका तंत्र (automatic nervous system) की बहुत सारे अनुक्रियाएँ विशेषकर डर (fear) या चिंता (anxiety) को अनुबंधित किया जा सकता है। जैसे, व्यक्ति अंधेरे से डरना सीख सकता अगर डर उत्पन्न करने वाला उद्दीपक जैसे डरावना स्वप्न या डरावना ख्याल उस अंधेरे में व्यक्ति के मन प्रायः उत्पन्न होते हैं। बहुत तरह के असामान्य व्यवहार को व्यक्ति इस क्लासिकी अनुबंधन द्वारा सीख लेता है। जैसे, दुर्भीति (phobia) जिसमें व्यक्ति उद्दीपक से उतना अधिक डरता है जितना कि सचमुच में उससे डरना नहीं चाहिए, पैवलोवियन अनुबंधन द्वारा अक्सर सीख लिया जाता है। जैसे, बिल्ली से उत्पन्न दुर्भीति जिस व्यक्ति में होती है, उसमें बिल्ली (CS) तथा उससे सम्बद्ध कुछ दर्दनाक घटना (painful events) जैसे उसके द्वारा नोंच-खसोट लेना (scratching) आदि का एक इतिहास अवश्य होता है। ऐसे इतिहास का परिणाम यह होता है कि बिल्ली व्यक्ति के लिए दुर्भीति का स्त्रोत हो जाता है हालांकि सामान्यतः बिल्ली से इस तरह का असामान्य डर की कोई बात नहीं होता है।

अनुबंधन के अनुसार सांवेगिक विकृति (emotional disorders) ही लक्षण (symptoms) है और वे यदि किसी प्रकार की विकृति (pathology) की ओर इशारा नहीं करते हैं, तो लक्षण को विलोपित कर देने से अपने आप ही सांवेगिक विकृति दूर हो जाएगी। चूंकि सांवेगिक विकृति के लक्षण ऐसी सांवेगिक अनुक्रिया होती है जिसे पैवलोवियन अनुबंधन द्वारा सीखा गया होता है, तो इससे अपने आप यह आशय निकलता है कि वे सारी प्रविधियाँ जिनके माध्यम से अनुबंधित सांवेगिक अनुक्रियाओं

को प्रयोगात्मक ढंग से विलोपित किया जाता है, द्वारा सांवेगिक विकृतियों को भी दूर किया जा सकता है।

स्पष्ट हुआ कि पैवलोवियन अनुबंधन के नियम के सहारे यह आसानी से समझा जाता है कि व्यक्ति में सांवेगिक विकृति का विकास कैसे हुआ तथा फिर उससे छुटकारा पाने का चिकित्सीय प्रविधि क्या हो सकता है।

(2) साधनात्मक या क्रियाप्रसूत अनुबंधन **(Instrumental or operant conditioning)** :- इस तरह के अनुबंधन की जड़ थॉर्नडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रभाव नियम **(law of effect)** है जिसे बाद में स्कीन्नर ने इस अनुबंधन के अनुसार व्यक्ति यह सीखता है कि उसे वांछित लक्ष्य **(desired goal)** की प्राप्ति किस तरह हो सकती है। किसी पुरस्कार **(reward)** को पाना लक्ष्य हो सकता है या फिर किसी दंड से दूर रहना सीखना लक्ष्य हो सकता है। इस तरह से स्कीन्नर ने थॉर्नडाइक के 'प्रभाव नियम' को पुनर्बलन का नियम' **(Principle of reinforcement)** के रूप में नामकरण किया और प्रभाव नियम में उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच के साहचर्य पर बल न डालकर अनुक्रिया **(response)** तथा उसके परिणाम **(consequences)** पर बल डाला है।

क्रियाप्रसूत अनुबंधन पर आधारित बहुत सारे ऐसी प्रविधियाँ विकसित की गयीं है जिनका उपयोग क्रियाप्रसूत चिकित्सा **(operant therapy)** में किया जाता है। इसे संयुक्त रूप से प्रसंभव्यता प्रबंधन **(contingency management)** कहा गया है। इसमें व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन उस व्यवहार के परिणाम **(consequences)** को नियंत्रित करके किया जाता है। इसके तहत आने वाले प्रमुख चिकित्सीय प्रविधियाँ में शेपिंग **(shaping)** टाइम-आऊट **(time out)**, प्रसंभाव्यता अनुबन्ध **(contingency contracting)**, अनुक्रिया लागत **(response cost)**, सांकितिक व्यवस्था **(token economies)** आदि प्रधान हैं।

व्यवहारवादी मॉडल या सिद्धान्त के कुछ गुण **(merits)** तथा परिसिमाएँ **(limitations)** हैं। इसके प्रमुख गुण **(merits)** निम्नांकित हैं :-

(i) व्यवहारवादी मॉडल की भूरी-भूरी प्रशंसा इसलिए की गयी है क्योंकि इसके द्वारा असामान्य व्यवहार की व्याख्या वस्तुनिष्ठ एवं यथार्थ ढंग से की गयी है।

(ii) आसामान्यता के व्यवहारवादी मॉडल का शोधपरक मूल्य अधिक बतलाया गया है। दूसरे शब्दों में, इस मॉडल या सिद्धान्त के अनुसार असामान्यता के अध्ययन के क्षेत्र में अब तक जितना शोध **(research)** किये गए हैं, उतना किसी अन्य मॉडल द्वारा प्रतिपादित सैद्धान्तिक विचारधारा में नहीं किया गया है।

(iii) व्यवहारवादी मॉडल अपनी उपयोगिता विशेष तरह के आसामान्य व्यवहार को अर्जित करने तथा उसका उपचार करने में लोकप्रिय ढंग से सिद्ध कर चुका है। व्यवहारवादी चिकित्सक पहले से यह तय कर लेते हैं कि कौन व्यवहार में परिवर्तन करना है और कैसे परिवर्तन करना है। बाद में चिकित्सा की प्रभावशीलता की जाँच इस बात से आसानी से कर ली जाती है कि उस व्यवहार में वांछित परिवर्तन हुआ या नहीं।

इन गुणों के बावजूद व्यवहारवादी मॉडल के कुछ परिसीमाएँ **(limitations)** या आलोचनाएँ हैं जो इस प्रकार हैं :-

(i) व्यवहारवादी मॉडल में रोग के लक्षणों पर काफी बल डाला जाता है परंतु अन्य सम्बद्ध पहलुओं की पूर्ण उपेक्षा की जाती है। सचमुच में इन लक्षणों के अतिरिक्त व्यक्ति का मूल्य तंत्र, पसदंगी तथा आत्म-निर्देशआदि भी महत्त्वपूर्ण कारक हैं जो असामान्य व्यवहार को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परंतु इन कारकों को महत्त्वहीन समझकर उसकी पूर्ण उपेक्षा की गयी है।

(ii) व्यहवहार मॉडल या सिद्धान्त में असामान्य व्यवहार का कारण सामान्यतः दोषपूर्ण सीखना माना गया है। इसे आलोचकों ने एक दावा माना है जिसे साबित करना कठिन एवं जटिल है। इतना ही नहीं, इस मॉडल की व्याख्या में गोलापन भी अधिक है। इन आलोचनाओं को कुछ उदाहरण से इस प्रकार समझाया जा सकता है- इस मॉडल के अनुसार विषाद व्यक्ति में विशेष पुनर्बलन इतिहास (पुनर्बलन का कम मिलना) से होता है । इस तथ्य को अध्ययन करना कितना कठिन है, इसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि ऐसे व्यक्ति के व्यवहार को कई वर्षों तक लगातार प्रेक्षण किया जाएगा और साथ-ही-साथ उसे मिलने वाला पुनर्बलन की मात्रा को ठीक ढंग से रिकार्ड किया जाएगा। किसी भी चिकित्सक के लिए यह एक कठिन कार्य दिखता है। उसी तरह से यदि एकांकी जुड़वाँ बच्चा जिसका पालन-पोषण अपने वास्तविक माता-पिता द्वारा हुआ हो ओर बाद में चलकर मनोविदालिता का रोगी हो जाता है, तो व्यवहारवादी मॉडल की यह व्याख्या होगी कि ऐसे बच्चों का पुनर्बलन इतिहास एक ही होने के कारण ऐसा हुआ। जब भ्रात्रीय बच्चे को घर पर रख कर पाला-पोषा जाता है और जब उसमें से कोई एक मनोविदालिता को रोगी हो जाता है, तो व्यवहारवादी मॉडल की व्याख्या यह होगी कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उनका पुनर्बलन इतिहास अलग-अलग था। सचमुच में इस तरह की व्याख्या में न केवल गोलापन ही बल्कि एक असंतोष भी झलकता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद व्यवहारवादी मॉडल को नैदानिक मनोविज्ञानियों ने काफी महत्त्वपूर्ण बतलाया है और शोध करके इसके नियमों एवं तथ्यों को अधिक उपयोगी बनाने की कोशिश किया है।